Himalayan Journal of Social Sciences & Humanities
(A Peer Reviewed Journal of Society for Himalayan Action Research and Development)
ISSN: 0975-9891

महाभारत कालीन सैन्य शिक्षा

कु0 पूनम एवं जे0 के0 गोदियाल
संस्कृत विभाग हे0न0ब0ग0 केन्द्रीय विश्वविद्यालय परिसर,पौड़ी गढ़वाल
Email id: kmpoonam1331@gmail.com

Manuscript Info

Manuscript History

Received: 06.09.2016

Revised: 11.10.2016

Accepted: 19.11.2016

कुंजी शब्द–
सैन्य शिक्षा, प्रशिक्षण, आश्रम आचार्य, अस्त्र,शस्त्र।

सारांश–

प्रस्तुत शोध पत्र में महाभारत कालीन सैन्य प्रशिक्षण व्यवस्था तथा आचार्यों एवं आश्रमों का परिचय दिया गया है एवं उनको विश्लेषित किया गया है।

महाभारत भारतीय संस्कृति का सर्वस्व एवं संस्कृत साहित्य का विश्व कोष है। एक लाख श्लोकों में महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित यह एक जाज्वल्यमान रत्न है। इसमें कौरव–पाण्डवों के भीषण युद्ध के वर्णन के साथ ही भारतवर्ष के वैभव के नष्ट होने की भीषण एवं विस्तृत कथा वर्णित है। संस्कृत वाङ्मय का अजस्त्र स्रोत तथा उसका उपजीव्य आधारस्तम्भ भी यही है। इसकी विशेषता इससे अधिक और क्या हो सकती है कि 'जो यहां वर्णित है वहीं सर्वत्र है और जो यहां नहीं है, वह कहीं भी नहीं है'। महाभारत में व्यास ने स्वयं इस बात का उल्लेख किया है–

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित।।[1]

महाभारत ज्ञान–विज्ञान का संग्रह है, इसमें मानव जीवन के समस्त पक्ष समाविष्ट हैं। महाभारत कालीन समाज की इसमें व्यापक मीमांसा उपलब्ध होती है। मानव जीवन के समस्त पक्षों का इसमें सुविस्तृत समावेश देखने को मिलता है। इसी क्रम में यहां युद्ध नीति का उल्लेख भी अपने आप में एक उपादेय विषय है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि महाभारत की संकल्पना में युद्ध नीति की भूमिका ही प्रबल रही है। युद्ध के विविध स्वरूप होते हैं। उसके लिये अनेक प्रकार की रणनीतियों की परिकल्पना करनी पड़ती है, तथा अनेक प्रकार का सैन्य संगठन उसके लिए अनिवार्य है। प्रस्तुत शोध पत्र में महाभारत में वर्णित उक्त सैन्य शिक्षा को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित किया गया है।

महाभारत कालीन सैन्य–शिक्षा

किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए शिक्षा नितान्त आवश्यक है। शिक्षा–प्रणाली में राष्ट्र की सुरक्षा हेतु सैन्य शिक्षा का भी अत्यधिक महत्त्व है। प्राचीन काल से ही लोग अपनी सुरक्षा के उपाय करते रहे हैं। पूर्वपाषाण एवं उत्तरपाषाण काल में लोग पत्थर निर्मित हथियारों से अपनी सुरक्षा करते थे एवं अपनी पीढ़ी को उस अस्त्र के प्रयोग की पद्धति का ज्ञान करा देते थे।

सैनिक प्रशिक्षण व्यवस्था

महाभारत कालीन समाज युद्धजीवी समाज था। युद्धजीवी समाज में सैनिक शिक्षा का विशिष्ट महत्त्व होता है। सैनिक शिक्षा राजकुमारों के शैक्षणिक जीवन का अनिवार्य एवं अविभाज्य अंग थी। महाभारत काल में सैनिक–शिक्षा अपने विकास के चरम शिखर पर थी। तत्कालीन समय में स्थायी सेना होने के कारण तथा क्षत्रिय वर्ग के कर्त्तव्यों की सीमा के दृढ़ रूप से निश्चित हो जाने के कारण सैनिक शिक्षा का महत्त्व भी बढ़ गया था। भर्ती किये जाने वाले सैनिकों को युद्ध शिक्षा दी जाती थी। राजकुमारों और उच्चकुल के पुत्रों के लिए राज्य की ओर से सैनिक–शिक्षालय होते थे। तत्कालीन आश्रम युद्ध विद्या के स्थायी केन्द्र थे। देश में अनेक सैनिक–शिक्षालय थे जिनमें योग्य शिक्षकों के निर्देशन में अनेक छात्र सैनिक–शिक्षा का अभ्यास करते थे। सैनिकों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए अनेक प्रकार के आचार्यों का महाभारत में उल्लेख हुआ है, इनमे आचार्य वह होता था, जिसका अपने शिष्यों से पिता–पुत्र का सम्बन्ध रहता था और जो अपने ही आश्रम (प्रशिक्षण केन्द्र) में रहने वाले शिष्यों को उनकी योग्यतानुसार शस्त्राध्ययन कराता था। गुरू के प्रशिक्षण केन्द्र में रहकर वहीं के कठोर अनुशासन का पालन करना पड़ता था।

शस्त्र–विद्या सिखाने के पश्चात् छात्रों की परीक्षा लेने का भी विधान था। पाण्डवों की परीक्षा लेने के लिए द्रोण ने एक नकली गृद्ध बनवाकर वृक्ष के अग्रभाग में स्थापित किया और सबसे बारी–बारी से उसे बीधने के लिए कहा। इस परीक्षा में अर्जुन अधिक सफल रहे।[2] तत्पश्चात् द्रोणाचार्य ने राजकुमारों द्वारा सीखी हुई विविध शस्त्र विद्याओं का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर लक्ष्यबेध, रथचर्या, गजपृष्ठ, ढ़ाल–तलवार तथा गदा कौशल आदि का प्रदर्शन किया गया। धृतराष्ट्र ने प्रसन्न होकर आचार्य द्रोण को प्रचुर दक्षिणा दी थी।[3]

प्राचीन काल में आचार्यों को ही शिक्षा का भार सौंपा जाता था। ऋषियों ने अपनी तपस्या के द्वारा दिव्यास्त्रों का दर्शन किया। अपने योग बल से विभिन्न अस्त्रों एवं शस्त्रों के प्रयोगों को सिद्ध किया एवं अपने आश्रमों में शिष्यों को उसका ज्ञान कराया। ये अस्त्र–शस्त्र मूलतः दो भागों में विभक्त थे। अस्त्र एवं शस्त्र के भेद को आचार्य शुक्र ने बड़े ही स्पष्ट शब्दों में इस प्रकार निरूपित किया है–

अस्यते क्षिप्यते यत्तु मन्त्रयन्त्राग्निभिश्च तत्।
अस्त्रं तदन्यतः शस्त्रमसिकुन्तादिकंच यत्।। [4]

मंत्र, यंत्र या आग के द्वारा जो हथियार फेंककर चलाया जाये उसे अस्त्र तथा इससे भिन्न जिन्हें हाथ में रखकर प्रहार किया जाए उसे शस्त्र कहते हैं।

महाभारत काल में सैन्य शिक्षा देने के लिए अनेक आचार्य प्रसिद्ध थे। इन आचार्यो के अपने आश्रम ही सैन्य शिक्षा के केन्द्र हुआ करते थे। इन्हीं आश्रमों में आचार्य छात्रों को सैन्य प्रशिक्षण दिया करते थे। महाभारत काल में होने वाले आचार्यों तथा उनके आश्रमों का उल्लेख इस प्रकार प्राप्त होता है–

1. **भरद्वाज आश्रम–** महाभारत के अनुसार आचार्य भरद्वाज का आश्रम[5] गंगाद्वार (हरिद्वार) में था।[6] इस आश्रम (विद्यालय) में वेद–वेदांगों के साथ अस्त्र–शस्त्र की शिक्षा भी दी जाती थी। भरद्वाज अस्त्रवेत्ताओं में श्रेष्ठ थे। उन्होनें अग्निवेश मुनि को इसी आश्रम में आग्नेय अस्त्र की शिक्षा दी थी।[7] द्रोणाचार्य को भी इसी आश्रम में

© SHARAD

आग्नेयास्त्र की शिक्षा मिली थी।[8] कई अन्य राजकुमार भी इस आश्रम में धनुर्वेद की शिक्षा लेते थे। राजा द्रुपद ने इसी आश्रम में द्रोण के साथ धनुर्वेद की शिक्षा पायी थी।[9] भरद्वाज आश्रम का उल्लेख रामायण में भी प्राप्त होता है।[10]

2. **परशुराम आश्रम–** यह आश्रम महेन्द्र पर्वत पर था।[11] महेन्द्र पर्वत पर परशुराम के आश्रम में भी द्रोण ने अध्ययन किया था। परशुराम ने प्रयोग, रहस्य, और उपसंहार विधि के साथ सभी अस्त्र–शस्त्रों की शिक्षा द्रोणाचार्य को दी थी।[12] इन्होंने भीष्म एवं कर्ण को शिक्षा दी थी। ब्राह्मण के रूप में कर्ण ने परशुराम से चारों प्रकार की अस्त्र विद्या सीखी, परन्तु भेद खुल जाने पर परशुराम ने ब्रह्मास्त्र प्राप्त करने के कारण कर्ण को श्राप दे दिया कि वह स्मरण करने पर भी काम नहीं आयेगा।

3. **कृपाचार्य का आश्रम–** आचार्य कृपाचार्य शरद्वान के पुत्र एवं ऋषि गौतम के पौत्र थे। इनकी बहन कृपी थी, जिसका विवाह द्रोणाचार्य से हुआ था। ये अस्त्र विद्या के महान आचार्य थे। इन्होनें कौरवों और पाण्डवों को अस्त्र विद्या सिखलायी थी।[13] ये ब्राह्मण थे एवं युद्ध में दुर्योधन के पक्ष में लड़े थे। युद्ध के उपरान्त भी ये जीवित थे।[14] कहते हैं शतानीक को इन्होनें अस्त्र दिया था।[15] ये सावर्णिमनु के आठवें मन्वन्तर के ऋषि भी माने जाते हैं।[16]

4. **द्रोणाचार्य आश्रम–** आचार्य द्रोण ब्राह्मण योद्धा थे। उन्होनें कौरवों तथा पाण्डवों को अस्त्र–शस्त्र की शिक्षा दी थी।[17] इन्होनें अग्निवेश से अस्त्र प्राप्त किये थे। द्रोण ने महेन्द्र पर्वत पर परशुराम से अस्त्र–शस्त्र की शिक्षा पायी थी।[18] अर्जुन इनके सबसे प्रिय एवं श्रेष्ठ शिष्य थे। एकलव्य ने इन्हे गुरू स्वीकार कर इनकी प्रतिमा के समक्ष शस्त्रास्त्र का अभ्यास किया।

5. **भीष्म का आश्रम–** भीष्म युद्धकला के श्रेष्ठ आचार्य थे। इनके निर्देशन पर ही द्रोण पाण्डवों के आचार्य बने।[19] भीष्म व्यूह कला में दक्ष थे। ये कुरू–क्षेत्र के मैदान में प्रतिदिन भिन्न–भिन्न व्यूह बनाते थे।[20] इन्होनें अर्जुन को शस्त्रज्ञान दिया था। इनके प्रिय शिष्य अर्जुन थे। भीष्म को इच्छा मृत्यु प्राप्त थी।

6. **जरासंध के मल्लयुद्ध का अखाड़ा–** जरासंध अपने युग के अद्वितीय मल्ल योद्धा थे। इनकी कथा महाभारत तथा भागवत पुराण में वर्णित है। मल्लयुद्ध की विद्या यहीं सिखी जाती थी।[21] बिहार राज्य के नालन्दा (राजगिरि) के पास इसका अखाड़ा प्रसिद्ध है। भीम से इनका 27 दिन तक युद्ध होता रहा। तब श्रीकृष्ण की दुरभि संधि से भीम ने इसे जुड़े स्थान से चीर कर इसका वध किया।[22] ये अपने अखाड़े में मल्ल युद्ध की शिक्षा दिया करते थे।

उपरोक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि महाभारत काल में सैन्य प्रशिक्षण के लिये प्रसिद्ध आचार्यों एवं आश्रमों की पूर्ण व्यवस्था थी, जो उस समय की सैन्य शिक्षा व्यवस्था को रेखांकित करता है। स्पष्ट है कि प्रवर्तमान में महाभारत की उक्त परम्परा निःसन्देह राष्ट्रीय सुरक्षा के सन्दर्भ में ध्यातव्य एवं अनुकरणीय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. महाभारत 1.56.33
2. महाभारत आदि. 123.45–46
3. महाभारत आदि. अध्याय 124–125
4. शुक्रनीति चतुर्थ अध्याय/सैन्य प्रकरण– 191 श्लोक
5. महाभारत वनः 102/5, पृ0 1244
6. महाभारत आदि. 129/33, पृ0 389
7. महाभारत आदि. 129/39, पृ0 389
8. महाभारत आदि. 129/40, पृ0 389
9. महाभारत आदि. 129/41–42, पृ0 389–38
10. रामायण–अयोध्या, सर्ग 54/7

© SHARAD

11. महाभारत आदि. 129/54, पृ0 390
12. महाभारत आदि. 129/65–66, पृ0 391
13. भाग० 10/78, 95/16, 80
14. भाग० 10/78/16, 10/80/2
15. विष्णु, 4/21/4
16. विष्णु, 3/2/7
17. भाग०, 10/56/2
18. महाभारत आदि. 129/66
19. महाभारत, 28/13/25
20. महाभारत, भीष्मपर्व
21. महाभारत आदि., 202/23, सभापर्व, 17/12, भाग. 9/22, गरूड़ पु0 1/40
22. भाग० 10/71/2–3–4, 10/72/15–47, वायु० पु० 93/27

****

© SHARAD